



International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519

IJSR 2023; 9(2): 327-329

© 2023 IJSR

www.anantaajournal.com

Received: 18-02-2023

Accepted: 21-03-2023

डॉ. श्वेता शशि

सहायक प्रोफेसर (अतिथि)

एक० के० कॉलेज, संस्कृत

विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा,

बिहार, भारत

वैदिक साहित्य के क्षेत्र में कश्मीर एवं मिथिला का योगदान

डॉ. श्वेता शशि

प्रस्तावना

कश्मीर का नाम सुनते ही हृदय में एक विशेष अनुभूति का स्फुरण होने लगता है। यह वही कश्मीर जिसको भारत का स्वर्ग कहकर सम्बोधन किया जाता है। कश्मीर कहना वस्तुतः प्रकृति प्रदत्त सूपमा तथा मनोहरीच्छटा को द्विगुणित करना है। कश्मीर को देखकर यह अनुमान करना पड़ता है कि प्रकृति ने अपनी सम्पूर्ण सुन्दरता यही पर एकत्रित कर दी है। जहाँ वैदिक साहित्य में कश्मीर का प्राकृतिक सौंदर्य वर्णन सहृदय पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट करता है वही व्याकरण के आचार्य ऋषि पाणिनि के कश्मीर शब्द की सिद्धि के लिए सूत्रों की रचना करना कश्मीर के प्रति उनके लगाव का द्योतक प्रतीत होता है।

सिद्धान्तकौमुदी में कृदन्तोणादि प्रकरण के चतुर्थ पाद में “कशेर्मुटच” सूत्र से मुडागम तथा ईरन् प्रत्यय से कश्मीर शब्द सिद्ध होता है। (सिद्धान्तकौमुदी खेमराज श्री कृष्ण दास श्री वेंकटेश्वर स्टीम मुद्रणालयाध्यक्ष, मुम्बई, सै. १९८९) कश्मीरी देश: गणपाठ में भी कश्मीर शब्द को कच्छादिगण (गणपाठ. पृ.६१८, वही) में “कच्छादिभ्यश्च” ४-२-१३३ तथा सिन्ध्वादि गण(गणपाठ पृ.६१९, वही) में पढ़ा गया है। सिन्धुतक्षशिला-दिभ्योडणजो ४-३-९३।

कश्मीर शब्द अलग-अलग गणपाठ-कच्छादि तथा सिन्ध्वादिपाठ में पठित होने कारण इसके ऐतिहासिक महत्व को सिद्ध करता है। इतिहासज्ञों को इस गणपाठ की दृष्टि से कश्मीर शब्द पर चिन्तन करना चाहिए। इस चिन्तन से कश्मीर के विषय में एक नवीन दिशा बोध हो सकता है।

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने भी रामायण में सीतान्वेषणप्रसंग में कश्मीर का उल्लेख किया है-

काश्मीरमण्डलं सर्वं शमीपीतुवनानि च ।

पुराणि च सशैलानि विचिन्वन्तु वनौकसः ॥ रा. ४-४३-२२१

महाभारत में भी कश्मीर का उल्लेख प्राप्त होता है।

कश्मीरिष्वेव नागस्य भवनं तक्षकस्य च ।

वितस्तारव्यमिति गच्छेच्च सर्वपापप्रमोचनम् ॥

Corresponding Author:

डॉ. श्वेता शशि

सहायक प्रोफेसर (अतिथि)

एक० के० कॉलेज, संस्कृत

विभाग, ल. ना. मि. वि., दरभंगा,

बिहार, भारत

हरिवंशपुराण में भी कश्मीर का उल्लेख प्राप्त है-

कश्मीरराजो गोनदों नरदाधिपतिनृपः ।

दुयोधनादयश्चैव धार्तराष्ट्राः महाबलाः ॥ हरिवंश पुराण ९३

आदिकाल से इस कश्मीरदेश को शारदादेश तथा सरस्वतीदेश से भी पुकारा जाता है ।

शब्दकल्पद्रुम में कश्मीर के परिमाण का उल्लेख करते हुए कहा है-

शारदामठमारम्य कुङ्कुमाद्रितटान्तगः ।

तावत्कश्मीरदेशः स्यात् पञ्चाशद्योजनात्मकः ।

कश्मीर में शारदामठ का महत्वपूर्ण स्थान है । शारदा के नाम का उल्लेख करते हुए महाकवि बिल्हण ने “विक्रमांकदेवचरितम्” में कश्मीर को शारदादेश कहा है ।

सहोदराः कुङ्कुमकेसराणां भवन्ति नूनं कविताविहासाः ॥

न शारदादेशमपास्य दृष्टस्तेषां यदन्यत्र मया प्ररोहः ॥ 2 ॥

नीलमुनि द्वारा प्रणीत नीलमतपुराण एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है । इस पुराण में कश्मीर शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है-

कः प्रजापतिरुद्दिष्ट कश्यपश्च प्रजापतिः ।

तैनासौ निर्मितो देशःकश्मीराख्यो भविष्यति ॥ 29 ॥

कश्यप प्रजापति द्वारा निर्मित यह देश कश्मीर है ।

कुछ विद्वानों की कल्पना है कि कश्मीर कश्यप ऋषि की तपोभूमि है-यहीं पर ही प्रसिद्ध मिहिरमन्दिर है । “कश्यप तथा मिहिर” दोनों प्रसिद्ध नामों को मिलाकर “कश्मीर” बना ।

कुछ विद्वानों की कल्पना है कि मौहम्मद मतावलम्बी शाहमीर नाम के विदेशी शासक ने प्रथम बार इस देश को अपने अधिकार में किया था । शहमीर के नाम का अपभ्रंश कश्मीर पड़ा होगा ।

इस मत के सम्बन्ध में कल्पना की उड़ान अधिक है । इतिहास इस तथ्य को प्रामाणिक नहीं मानता । शहमीर से पहले ही कश्मीर नाम प्रसिद्ध हो चुका था जिसके प्रमाणस्वरूप रामायण व महाभारत को लिया जा सकता है ।

काश्मीर वस्तुतः शारदा या सरस्वती का देश है । काश्मीर में सरस्वतीपुत्रों ने (काश्मीर संस्कृत विद्वान) अपनी प्रतिभा से संस्कृत साहित्य को अनुपम ग्रन्थरत्न देकर इसको सुशोभित किया

है । जब हम कश्मीरी विद्वानों की गणना करते हैं तो कनिष्ठिकाधिष्ठित के स्थान पर बहुवारमधिष्ठिताङ्गुलिषु का प्रयोग करने को उत्सुक होना पड़ता है । कश्मीरी विद्वानों की संस्कृत साहित्य को देन किसी एक क्षेत्र विशेष में नहीं है । कश्मीरी विद्वानों ने साहित्य शास्त्र, महाकाव्य, गद्यकाव्य, व्याकरण दर्शन आदि क्षेत्रों में संस्कृत साहित्य की अभिवृद्धि की है ।

अति प्राचीन काल में पुराणों के लेखानुसार मिथिला के अन्तर्गत वर्तमान नेपाल राज्य की तराई भूमि का विशेष अंश सन्निविष्ट था । वाल्मीकीय रामायण तथा विष्णु, वायु, स्कन्द, एवं श्रीमद्भागवत पुराणों में मिथिला की सीमाओं का उल्लेख नहीं है । परन्तु गंगा के उत्तर के भू-भाग में मिथिला एवं वैशाली के नाम के दो राज्य थे, इसका पता वाल्मीकीय रामायण और मार्कण्डेय, विष्णु तथा अन्य पुराणों के अध्ययन से लगता है । उन दोनों राज्यों के बीच सीमा क्या और कहाँ थी, इसका वर्णन उन ग्रन्थों में नहीं है ।

तीरभुक्ति अथवा तीरहुति वा तिरहुत मिथिला का परवर्ती नाम है । मिथिला खण्ड बृहद् विष्णुपुराण का एक भाग माना जाता है । उसके अनुसार तीरभुक्ति के पूर्व में कौशिकी (कोशी), पश्चिम में शालग्रामी (नारायणी, गंडकी अथवा सदानीरा), दक्षिण में गंगा और उत्तर में पर्वतराज हिमालय का अरण्य-प्रदेश सुशोभित है । पूर्वोक्त सीमाओं के बीच वर्तमान दरभंगा, मुजफ्फरपुर और चम्पारण जिलों के सम्पूर्ण भू-भाग एवं मुंगेर, भागलपुर तथा पूर्णिया जिलों के अंश तथा नेपाल की तराई भूमि आ जाती है । बृहद् विष्णुपुराण के मिथिला खण्ड में मिथिला (तीरभुक्ति) की सीमाओं के विषय में निम्नांकित रूप में वर्णन किया गया है-

“गंगाहिमवतोर्मध्ये नदी पंचदशान्तरे ।

तैरभुक्तिरिति ख्यातो देशः परमपावनः ॥

कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमधिगम्य वै ।

योजनानि चतुर्विंशद् व्यायामः परिकीर्तितः ॥

गंगाप्रवाहमारभ्य यावद्द्वैमवतं वनम् ।

विस्तारः षोडश प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन ॥

मिथिला नाम नगरी समस्ते लोकविश्रुता ।

पंचभिः कारणैः पुण्या विख्याता जगतीत्रये ॥

उपर्युक्त उद्धरण के अनुसार मिथिला जनपद की लम्बाई २४ योजन अथवा १९२ मील, तथा चौड़ाई १६ योजन अथवा १२८ मील थी और उसके उत्तर में पर्वतराज हिमवान का आरण्य प्रदेश, दक्षिण में हिमवत्-प्रभवा पुण्यसलिला गंगा नदी, पूर्व में परम चंचला कोशी नदी की वेगवती धारा और पश्चिम में गण्डकी

नदी है। गण्डकी नदी को नारायणी एवं सदानीरा भी कहा जाता है, जो हाजीपुर के निकट बिहार राज्य की राजधानी पटना (पाचीन पाटलीपुत्र) के सामने गंगा से मिलती है। यह नारायणी गंडक, बूढी गंडक भिन्न से है। वैदिक एवं ब्राह्मण-काल में नारायणी गंडक का नाम सदानीरा था। पर पाश्चा विद्वान पार्सीटियर एवं ओल्डेनबर्ग इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते हैं। उनके मतानुसार सदानीरा राप्ती नदी का पुरातन नाम है। सम्प्रति नारायणी गण्डक को जनता शालग्रामी नाम से भी पकारती है। क्योंकि उसके उद्गम-स्थान से ही विष्णु की पावन प्राकृतिक प्रस्तुर मूर्ति शालिग्राम की प्राप्ति होती है।

‘शक्तिसंगम तन्त्र’ (बी० भट्टाचार्य सम्पादित, गायकवाड ओरिएण्टल सीरीज, जिल्द- १०४, सुन्दरी खण्ड, भाग- ३, श्लोक- ४२, पृ० ६९) में अंकित किया गया है, यथा—

“गण्डकीतीरमारभ्य चम्पारण्यान्तकं शिवे।

विदेहभूः समाख्याता तैरभुक्त्यभिधः स तु।।”

मिथिला के प्रख्यात विद्वान् कविवर पं० चन्दा झा ने मिथिला व तीरहुति अथवा तिरहुत की सीमाओं का अंकन नीचे लिखे छन्द में किया है—

“गंगा बहथि जनकि दक्षिण दिशि पूर्व कौशिकी धारा।
पश्चिम बहथि गंडकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा।।
कमला, त्रियुगा, अमृता, धेमुरा, वागमती कृत सारा।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा।।”

विख्यात विद्वान डा० गंगानाथ झा (कोमेमोरेशन वॉल्यूम, पृ० ३८०) ने मुगल सम्राट अकबर द्वारा खंडवाला कुल के दरभंगा महाराज के पूर्वज महेश ठाकुर को मिथिला-राज्य-प्रदान के सम्बन्ध में उर्दू अक्षरों में अंकित प्रमाण-पत्र (सनद) से मिथिला की सीमाओं के विषय में निम्नलिखित पद उद्धृत किया है—

“अज कोष ता गोस अज गंग ता संग।।”

वहाँ ‘कोष’ शब्द कोशी का बोधक है तथा ‘गोस’ गण्डकी का। फारसी में ‘संग’ अथवा सङ्ग का अर्थ पत्थर (पर्वत) होता है, यथा संगमरमर। इससे यह स्पष्ट है कि सम्राट अकबर ने मिथिला का जो राज्य दरभंगा महाराजा के आदि पूर्वज महेश ठाकुर को दिया था, उसका विस्तार कोशी से गण्डकी तक तथा गंगा से नगराज हिमालय के वन्य प्रदेश तक था।

‘इण्डियन कल्चर’ वॉल्यूम-८, पृ० ४१ और ५४ में भी मिथिला के विषय में लिखा है, यथा—

“कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमधिगम्य वै।” आदि।

मिथिला की सीमाओं के अन्दर सम्पूर्ण दरभंगा, मुजफ्फरपुर एवं चम्पारण (चम्पकारण्य) जिलों तथा भागलपुर, पूर्णियाँ और मुंगेर (मुद्गरि) जिलों के कुछ अंश की भूमि के साथ तराई नेपाल एवं निचली हिमालय पर्वत-श्रेणी भी थी (दरभंगा जिला गजेटियर, पृ० १५२; श्यामनारायण सिंह : हिस्ट्री ऑफ तिरहुत, पृ० 2-33; रेप्सन: एनशिण्ट इण्डिया, पृ० (१७४-७५), यह इसके पूर्व लिखा जा चुका है। इसका विस्तार २५° २८’ और २६° ५२’ लेटीच्युड एवं ८४° ५६’ लोंगीच्युड (अक्षांश रेखाओं) के बीच है (इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, ८, पृ० १८७; दरभंगा जिला गजेटियर, पृ० १५२)।

भिन्न-भिन्न काम में मिथिला राज्य के क्षेत्र के विस्तार में परिवर्तन दृष्टिगत होता है। उत्तर में हिमालय के पादभाग से आरम्भ कर दक्षिण में गंगा की धारा तक, तथा पूर्व में महानन्दा से लेकर पश्चिम में गण्डकी तक मिथिला का क्षेत्रफल लगभग २५००० वर्ग मील होता है (डा० उपेन्द्र ठाकुर : हिस्ट्री ऑफ मिथिला, पृ० ३)।

एच० सी० रायचौधरी विदेह-राज्य मिथिला को उत्तर बिहार के वर्तमान तीरहुति अथवा तिरहुत के भीतर ही सीमित मानते हैं (पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एनशिण्ट इण्डिया, ५, पृ० ४४)। कीथ एवं मैकडोनेल के विचार में मिथिला को कोशल-राज्य से पृथक करने वाली नदी सदानीरा (वर्तमान गण्डक नदी, जो नेपाल से आरम्भ होकर पटना के सामने गंगा से मिलती है) थी। पर ओल्डेनबर्ग सदानीरा एवं गण्डक में भेद बताते हैं, तथा पार्सीटियर सदानीरा को राप्ती नदी मानते हैं।

मिथिला राज्य हुएन्-त्संग द्वारा वर्णित पंच भारत (फाइव इण्डियाज) में से एक था।

सन्दर्भ

1. स्कन्दपुराणप्र० ख०-29 (स्कन्दपुराण) ए०बी० एल०अवस्थी, (सं०) लखनऊ, 1976
2. मार्कण्डेयपुराण-सां.अ.पृ.-बेंकटेश्वरप्रेसबम्बई, 1959 एफ.ई. पार्जिटर (अंग्रेजी अनुवाद) कलकत्ता-1888-1905
3. अव्यवप्रकाश पृ०-सं०-525 मित्रमित्रा
4. वही
5. महाभारत-क्रिटिकल एडीसनपूना, प्रतापचन्द्रराय, कलकत्तागीताप्रेसगोरखपुर।